वित्तीय शिक्षा: योग्य और सार्थक *

दुव्वुरी सुब्बाराव

श्री प्रणव मुखर्जी, भारत के माननीय वित्त मंत्री,राजदूत रिचर्ड बाउचर, उप महासचिव, ओईसीडी, डॉ. के.सी. चक्रवर्ती, उप गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक, श्री वी.के. शर्मा, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक, विशिष्ट अतिथियो और रिजर्व बैंक के मेरे साथियों

सबसे पहले, मैं कहना चाहता हूं कि भारतीय रिजर्व बैंक ''वित्तीय साक्षरता'' पर इस कार्यशाला को अत्यंत महत्व देता है। वर्ष 2009-10 रिजर्व बैंक का प्लेटिनम जुबली वर्ष है। पिछले एक वर्ष के दौरान हमने विभिन्न तरीकों से इस यादगार पड़ाव को मनाया है। इन समारोहों का सबसे स्थायी हिस्सा आउटरीच कार्यक्रम है जिसमें गवर्नर और उप गवर्नरों सहित बैंक का शीर्ष प्रबंधन पूरी तरह से लगा रहा और शहरी प्रभाव से दूर, बैंकिंग सेवा रहित गांवों में दूर-दूर जाकर इसे पूरे देश में लोकप्रिय बनाया। यह आउटरीच कार्यक्रम दो उद्देश्यों से प्रेरित रहा। बैंक के कार्यक्रमों और नीतियों की मुख्य रूप से वास्तविकता जाँचने के लिए गांवों में रहने वाले भारत की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को समझना पहली जरूरत है। दूसरा उद्देश्य था बड़े पैमाने पर लोगों को यह समझाना कि रिजर्व बैंक क्या करता है , ऐसा क्यों करता है, महत्वपूर्ण है, और इससे लोगों के दैनिक जीवन में क्या अंतर पड़ता है।

पहुंच (आउटरीच) कार्यक्रम

2. रिजर्व बैंक के शीर्ष प्रबंधन में हम सब के बीच, वास्तव में पूरी संतुष्टि के साथ यह दावा करते हुए मुझे खुशी हो रही है कि हमने हर राज्य और अधिकांश केंद्र शासित प्रदेशों में कम से कम एक गांव का दौरा किया है। यह देखते हुए कि भारत में 600,000 से भी अधिक गांव हैं, हर तरह से हमारा यह कवरेज नगण्य है। लेकिन फिर भी, यह व्यक्तियों के रूप में हम सब के लिए और एक संस्था के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक के लिए एक

* 22 मार्च 2010 को बंगलूरू में वित्तीय साक्षरता पर भारतीय रिजर्व बैंक -ओईसीडी अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में डॉ. डी. सुब्बाराव, गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा की गई टिप्पणियाँ ।

अत्यधिक लाभदायक अनुभव रहा है। हमें इस तरह से बहुत अधिक सीखने को मिला है। इतना सीखने के लिए हमें सैकड़ों रिपोर्टें पढ़नी पड़तीं और ढेर सारी बैठकों और सम्मेलनों में भाग लेना पड़ता। और सबसे बड़ी बात यह थी कि गगनचुंबी इमारतों के वातानुकूलित दफ्तरों में बैठने के बजाय इसमें ढेर सारा मज़ा रहा। यदि मुझे इन यात्राओं से मिलनेवाले महत्वपूर्ण सबक के बारे में बताना पड़े तो वह है ग्रामीण लोगों की बढ़ती आकांक्षाएं और बढ़ती जागरूकता। हम सभी यह जानकर के आश्चर्यचकित थे कि ग्रामीण महिलाओं को बचत और निवेश के बारे में कितना पता है और इससे भी अधिक इस बात से आश्चर्यचकित थे कि वे बचत और निवेश के बारे में और अधिक जानने के लिए कितनी उत्सुक हैं।

3. यह स्वयंसिद्ध है कि जब आय के स्तर में वृद्धि होती है तो परिवारों के समय का क्षितिज लंबा हो जाता है। वे अगले कृषि मौसम के बारे में सोचने से लेकर अगले पांच वर्ष के बारे में और फिर अपने बच्चों के भविष्य और अपने बुढ़ापे के बारे में सोचना शुरू कर देते है। यह स्वस्थ चिंताएं है जिन्हें हमें भुनाना चाहिए। रिज़र्व बैंक में हम सभी को इस बात का एहसास है कि अगर हम सामने से आ रही वित्तीय साक्षरता की इस चुनौती का सामना नहीं करते और इस अवसर का लाभ नहीं उठाते तो हम अपने उद्देश्य में असफल हो जाएंगे। यही वह वजह है जिससे कि हम वित्तीय साक्षरता को आगे बढ़ाना इस कार्यशाला से सीखना महत्वपूर्ण है और रिज़र्व बैंक में हमारे लिए मूल्यवान भी है।

ओईसीडी के साथ साझेदारी

4. यह हमारा परम सौभाग्य है कि इस कार्यशाला के लिए एक सह प्रयोजक के रूप में हमें ओईसीडी मिला है। वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में ओईसीडी अग्रणी रहा है। यह वित्तीय साक्षरता में अनुसंधान और मूल्यांकन में लिप्त है तथा वित्तीय शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने में सक्रिय रहा है। ओईसीडी अब तक वित्तीय साक्षरता में जमीनी प्रयोगों संबंधी ज्ञान का सबसे मूल्यवान भंडार है। इन अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं से भारत को इस प्रक्रिया के अनेक चरणों को मेढ़क की तरह उछल कर पार करने में निश्चित रूप से सहायता मिलेगी। अतः ओईसीडी के साथ साझेदारी भारत के लिए एक विशाल और बहुमूल्य सीखने का अवसर है।

वित्तीय साक्षरता महत्वपूर्ण क्यों है?

5. मैं कुछ कदम पीछे आऊंगा और इस बात पर कुछ मिनट खर्च करूगां कि वित्तीय साक्षरता इतनी महत्वपूर्ण क्यों है। वस्तुतः ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसकी अर्थव्यवस्था वित्तीय क्षेत्र की संबंधित गहनता के बिना विकसित परिपक्व हुई हो और ऐसी गहनता केवल तभी संभव है जब लोग और परिवार वित्तीय रूप से साक्षर हु और यह पूरी तरह से जानते हो की उन्हें कैसे बचत करनी है, कैसे उधार लेना है और कैसे निवेश करना है। वास्तव में इस बात पर बहस संभव है कि यदि लोग वित्तीय रूप से अधिक 'साक्षर' होते तो यह सब-प्राइम समस्या ने बढ़कर ऐसा विस्फोटक रूप नहीं लिया होता।

6. यह व्यक्तिगत स्तर से परे और उतना ही महत्वपूर्ण है कि अपेक्षाकृत अधिक वित्तीय साक्षरता संसाधनों के बेहतर आबंटन में सहायक हो सकती है और इस प्रकार यह अर्थव्यवस्था की दीर्घावधि संभावित वृद्धि को बढ़ा सकती है। भारत में वृद्धि के विकास पथ के वैश्विक वित्तीय संकट से बाधित होने से पूर्व 2004-08 की अवधि में लगभग 9 प्रतिशत की औसत वृद्धि अर्जित की थी। इस वृद्धि के महत्वपूर्ण प्रेरकों में से एक अर्थव्यवस्था में बचत की बढ़ी हुई दर रही है जो इस संकट से पूर्व

वर्ष 2007-08 में जीडीपी के 36 प्रतिशत जितना ऊंची पहुंच गयी थी।

7. बचत में वृद्धि ही अपने आप में बदलती जनसांख्यिकी का परिणाम रही है और घरेलू बचतों में वृद्धि यह प्रवृत्ति स्वागत योग्य है। तथापि, हमारी आधे से अधिक आबादी अभी भी बैंकिंग और अन्य वित्तीय सेवाओं से पहुंच से दूर है। यदि हम इस समस्या को दूर कर सकें और 'पीछे छूट गई' इस आबादि को बैंकिंग सेवाओं का समस्य लाभ पहूंचा सके तो हम घरेलू और समस्य देशी बचतों को और भी बढ़ा सकेंगे और वह द्विअंकीय वृद्धि हासिल करने की आवश्यक शर्तों में से एक शर्त पूरी करेगी जिसका हम सपना देखते हैं।

8. ऐसा करने के लिए हमें और अंदर तक जाने तथा एक सार्थक तरीके से समाज के सभी वर्गों तथा देश के सभी क्षेत्रों तक वित्तीय सेवाओं का कवरेज बढ़ाने की आवश्यकता होगी, विशेष रूप से उन लोगों तक जो कि आर्थिक पिरामिड के तल पर हैं। वित्तीय उत्पादों तक पहूंच में कमी अथवा जब वे मिल रहे हो तब भी उनका प्रयोग न करने के पिछे होने वाले कारनों में से एक कारण वित्तीय जागरूकता और साक्षरता का अभाव है। एनसीएईआर और मैक्स न्यूयार्क लाईफ का एक अध्ययन दर्शाता है कि भारत में सर्वेक्षण किए गए श्रमिकों का लगभग 60 प्रतिशत यह दर्शाता है कि वे घर में नकद पैसा रखते हैं और साहूकारों से उंची ब्याज दरों पर उधार लेते हैं - यह ऐसा पैटर्न है जो उनकी वित्तीय जोखिम बढ़ाता है।

9. इस प्रकार वित्तीय समावेशन सुनिश्चित करने में वित्तीय साक्षरता और जागरूकता एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुडे हुए हैं। यह केवल वित्तीय ज्ञान और सूचना देने के लिए नहीं है; यह बदलते व्यवहार के बारे में भी है। अंतिम लक्ष्य तो लोगों को सशक्त बनाना है ताकि वे निर्णय ले सकें जो कि उनके अपने हित में हैं। जब ग्राहक उपलब्ध वित्तीय उत्पादों के बारे में जानते हैं, जब प्रत्येक उत्पाद की अच्छाई और बुराई का मूल्यांकन करने में समर्थ हैं, इस बात की सौदेबाजी करने में भी समर्थ है कि उन्हें क्या चाहिए, तो वे अत्यंत सार्थक तरह से अपने को सशक्त महसूस करेंगे। जवाबदेही की मांग करने के लिए उनके पास पर्याप्त ज्ञान होगा और वे शिकायतों का निवारण की भी मांग कर सकेंगे इससे वित्तीय बाजारों की अखंडता और गुणवत्ता भी बढ़ेगी। एक बड़ा पार्ट जो हमने अपने इस आउटरीच कार्यक्रम से सीखा है वह यह है कि वित्तीय साक्षरता न केवल जनता के लिए अच्छी है बल्कि एक अच्छी योग्यता है। इसका अर्थ यह है कि वित्तीय साक्षरता के मजबूत होने से न केवल व्यक्तियों और परिवारों को फायदा होता है बल्कि एक बड़े पैमाने पर समाज को भी इसका लाभ मिलता है।

रिज़र्व बैंक की पहलें

10. रिज़र्व बैंक में हम वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता को जुड़वां स्तंभों के रूप में मानते हैं। वित्तीय साक्षरता मांग पक्ष को उत्प्रेरित करती है - लोगों को किसी बात के लिए जागरूक बनाती है कि वे क्या कर सकते हैं और उन्हें क्या मांगना चाहिए। वित्तीय समावेशन आपूर्ति पक्ष की ओर से कार्य करता है - लोगों को जो चाहिए वह वित्तीय बाजार में उन्हें उपलब्ध कराता है। जहां हमने पारंपरिक रूप से आपूर्ति पक्ष के बहुत से उपायों के माध्यम से वित्तीय समावेशन कि समस्या को दूर करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया है ताकि बैंकिंग प्रणाली के साथ 'लोगों को जोड़ने में' सहायता की जा सके। हमने मांग पक्ष की अनिर्वायता को ही पहचाना है - कि वित्तीय सेवाओं तक पहुंच को सुधारने के साथ-साथ वित्तीय साक्षरता और शिक्षा को हाथों-हाथ विकसित किया जाना चाहिए।

11. वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता को और बढ़ाने के लिए पिछले कुछ वर्षों के दौरान अनेक उपाय किए है। पिछले एक साल में हमने ये उपाय सघन बनाए हैं। मैं उनके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता क्योंकि आपको इन पर चर्चा करने का अवसर मिलेगा और मुझे विश्वास है कि इस कार्यशाला में इन उपायों पर आलोचनाएं होंगी। लेकिन मैं इन उपायों को रेखांकित करना चाहूंगा जिन पर रिज़र्व बैंक और वाणिज्य बैंक सहमत हुए हैं।

वित्तीय समावेशन के संबंध में बैंकों को भारतीय रिज़र्व बैंक की सलाह

12 विशेष रूप से हम तीन बातों पर सहमत हुए हैं। पहली बात, प्रत्येक जिलें के अग्रणी बैंक से यह कहा गया है कि वह मार्च 2012 तक 2000 से अधिक की आबादी वाले सभी गावों को एक बैंकिंग आउटलेट के माध्यम से, जरूरी नहीं कि वह एक बैंक शाखा हो, वित्तीय सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए इस माह (मार्च 2010) के अंत तक एक रोड मॅप तैयार करे। मार्च 2011 तक एक मध्य लक्ष्य हासिल करना होगा। इसे पूरा करने के लिए बैंकों को प्रौद्योगिकी और नवोन्मेषी कम लागत वाले कारोबार माडलों का सहारा लेना होगा। दूसरी बात, सभी देशी सरकारी और नीजी क्षेत्र के वाणिज्य बैंक इस बात पर सहमत हुए है कि वे मार्च 2010 तक अपनी विशिष्ट बोर्ड अनुमोदित वित्तीय समावेशन योजनाएं (एफआइपी) लेकर आएंगे जो अगले तीन वर्ष में रोल आउट की जाएंगी। इन योजनाओं में गुणात्मक संकेतक और मात्रात्मक मील के पत्थर, दोनों ही होंगे। तीसरी बात, हमने सभी बैंकों से अनुरोध किया है कि वे अपने फील्ड स्टाफ के कार्यनिष्पादन मूल्यांकन में वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन से संबंधित मानदंडों को शामिल करें।

भावी पथ विषयक अनुसंधान

13. रिज़र्व बैंक में हम वित्तीय साक्षरता को मजबूत बनाने में मूल्य और प्राथमिकता जोड़ते हैं। हम जानते हैं कि यह एक दुर्जेय चुनौती है लेकिन यह एक बहुत बड़ा अवसर भी हैं। मुझे तो इस पर भी यकीन नहीं है कि हमारे पास सारे सवालों के जवाब हैं। लेकिन मैं सीखने के लिए उत्सुक हूं। मैं जानता हूं कि यह कार्यशाला आपको कुछ मौजूदा सवालों के जवाबों के नज़दीक ले जाएगी और हो सकता है कि कुछ नए सवाल भी खड़े हो जाएं और इस पर आप सबके काम शुरू करने से पहले मैं कुछ विचार रखना चाहता हूं जिन पर और अधिक अनुसंधान से ढेर सारा फायदा होगा।

- पहला, सरकार और इससे जुड़े बहुत से लोगों की वित्तीय शिक्षा के प्रति महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता को देखते हुए ऐसे कार्यक्रमों का प्रभाव और प्रभावशालिता निर्धारित करना महत्वपूर्ण है ताकि यह समझा जा सके कि क्या चलेगा और क्या नहीं चलेगा। हम जानते है कि भारत एक विविधता पूर्ण देश है जिसने 'हजारों फूलों को खिलने' की अनुमति देकर एक अलग तरह से अपने विकास को आगे बढ़ने दिया है। सर्वोत्तम प्रथाएं तैयार करने के लिए इन आधारभूत प्रयोगों का एक सर्वेक्षण और मूल्यांकन करना उपयोगी रहेगा। खासतौर से, हमें एक ओर बेहतर वित्तीय परिणामों और साक्षरता के बीच संबंधों का और दूसरी ओर वित्तीय समावेशन तथा बेहतर वित्तीय परिणामों के बीच संबंधों का अध्ययन करना होगा ताकि यह पता लगाया जा सके की कौन से मॉडल कारगर रहे हैं।
- दूसरा, वित्तीय साक्षरता कार्याक्रमों के लिए प्रशिक्षित अनुदेशकों को की आवश्यकता पड़ेगी। सबसे ज्यादा कारगर होने के लिए इन अनुदेशकों को

अथवा परामर्शदाताओं को उस समय ग्राहकों से मिलना चाहिए जब वे महत्वपूर्ण वित्तीय निर्णय ले रहे हों। वित्तीय सूचना की जागरूकता और सामयिकता वित्तीय साक्षरता को उपयोगी और प्रासांगिक बनाने के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, *सेवा* जैसे गैर सरकारी संगठन द्वारा किए गए सफल प्रयोगों का अध्ययन करना उपयोगी रहेगा जिन्होंने प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सहित गरीब स्वरोजगारी महिलाओं के लिए एक वित्तीय परामर्श प्रशिक्षण सेवा प्रारंभ की थी और यह पता लगाना होगा कि उन कुछ एक सफलताओं को लागत प्रभावी तरीके से मुख्य धारा में किस प्रकार लाया जा सकता है।

- प्रौद्योगिकी के पास इतनी क्षमता है कि वह वित्तीय साक्षरता के विकास को डिलीवरी चैनल (उदाहरण के लिए इंटरनेट) और सीखने की प्रक्रिया (उदाहरण के लिए अनुदेशीय कंप्यूटर), दोनों ही तरीके से वित्तीय साक्षरता के विकास को बड़ा सके। प्रौद्योगिकी उन समुदायों के बीच जो ग्रामीण और दूरदराज़ के क्षेत्र में रहते हैं, के बीच भी दूरियों को भी पाट सकती है। हम वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में लोगों को लगाने और उन्हें सशक्त बनाने के तरीको में संप्रेषण और प्रौद्योगिकी का बेहतर तरीके से इस्तेमाल कर सकतें है। यह स्वीकार करते हुए कि लोग विभिन्न प्रकार से सूचना प्राप्त करते हैं, सीखते है और उसे पचाते हैं, अतः यह उपयोगी रहेगा कि लोगों का ध्यान और रूचि आकर्षित करने के सर्वोत्तम तरीका निर्धारित करने के लिए संप्रेषण के सभी संभावित मार्गों का सर्वेक्षण किया जाए। प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी के उपयोगी की भी संभावनाएं तलाशी जानी चाहिए।

अब मुझे अपनी बात वहीं समाप्त कर देनी चाहिए जिससे कि आप वित्तीय साक्षरता से जुड़ मुद्दों पर गंभीर कार्य करना प्रारंभ कर सकें। एक बार मैं फिर से रिज़र्व बैंक के साथ साझेदारी करने के लिए ओईसीडी को धन्यवाद देता हूं और इस कार्यशाला की सफलता की हार्दिक कामना करता हूं।